

एशिया महाद्वीप

विश्व के सभी महाद्वीपों में एशिया जनसंख्या एवं क्षेत्रफल दोनों की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसका अक्षांशीय विस्तार 10° दक्षिण से 80° उत्तर अक्षांशों के बीच है। इसकी मुख्य भूमि विषुवत वृत्त के उत्तर में स्थित है तथा कुछ द्वीप दक्षिणी गोलार्द्ध में भी स्थित हैं। एशिया महाद्वीप का देशान्तर विस्तार 25° पूर्व से 170° पश्चिम तक है। यह संपूर्ण विश्व का लगभग 30% भाग है।

एशिया तथा यूरोप के बीच में दो सागर, कैस्पियन तथा काला सागर और दो पर्वत शृंखलायें यूराल तथा कॉकेशस स्थित हैं। एशिया व अफ्रीका के बीच स्वेज नहर तथा लाल सागर सीमा बनाते हैं। एशिया के दक्षिण में हिन्द महासागर, उत्तर में आर्कटिक महासागर और पूर्व में प्रशांत महासागर स्थित हैं। वहीं बेरिंग जलसंधि द्वारा यह उत्तरी अमेरिका से अलग होता है। एशिया से होकर गुजरने वाले अक्षांशीय वृत्त, विषुवत, कर्क और आर्कटिक गुजरते हैं तथा न्यूगिनी द्वीप को एशिया तथा ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के बीच सीमा समझा जाता है। दो देशों रूस तथा टर्की की अवस्थिति एशिया तथा यूरोप दो महाद्वीपों में हैं।

एशिया महाद्वीप के भौगोलिक अध्ययन के लिये इसे मुख्यतः 6 प्रदेशों में बाँटा जाता है-

(A) **दक्षिण-पश्चिम एशिया-** इसमें 15 देश आते हैं-

1. अफगानिस्तान, 2. बहरीन, 3. साइप्रस, 4. ईरान, 5. ईराक, 6. इजराइल,
7. जॉर्डन, 8. कुवैत, 9. लेबन, 10. ओमान, 11. कतर, 12. सउदी अरब,
13. यमन, 14. टर्की, 15. फिलिस्तीन

(B) **दक्षिण एशिया-** इसके अन्तर्गत 7 देश आते हैं-

1. बांग्लादेश, 2. भूटान, 3. भारत, 4. मालदीव, 5. नेपाल, 6. पाकिस्तान,
7. श्रीलंका

(C) **दक्षिण-पूर्वी एशिया-** इसमें 10 देश आते हैं-

1. ब्रुनेई 2. म्यांमार 3. कंबोडिया 4. इंडोनेशिया 5. लाओस 6. मलेशिया
7. फिलीपींस 8. सिंगापुर 9. थाइलैंड 10. वियतनाम

(D) **पूर्वी एशिया-** इसके अन्तर्गत 8 देश आते हैं-

1. चीन 2. जापान 3. उत्तर कोरिया 4. दक्षिण कोरिया 5. ताइवान
6. हांगकांग 7. मकाऊ 8. मंगोलिया

(E) **मध्य एशिया-** 5 देश शामिल हैं-

1. कजाकिस्तान 2. किर्गिस्तान 3. ताजिकिस्तान 4. तुर्कमेनिस्तान 5. उज्बेकिस्तान

(F) साइबेरिया के क्षेत्र में रूस तथा आस-पास के द्वीप शामिल हैं।

एशिया महाद्वीप तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के सबसे बड़े देश रूस के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य
यूराल पर्वतीय क्षेत्र में कोयला निक्षेप के अभाव के बावजूद लौह इस्पात उद्योग का विकास हुआ है। ट्रांस साइबेरिया रेलमार्ग जो कि विश्व का सबसे लम्बा रेलमार्ग है, रूस की राजधानी मॉस्को (प. स्टेशन) से चलकर जापान सागर के तट पर स्थित व्लादिवोस्तोक तक जाता है। बैकाल झील, विश्व की सबसे गहरी झील है, जो प्राचीनतम भी मानी जाती है। यह झील मानवीय गतिविधियों के कारण अपना अस्तित्व खो रही है।

रूस की कुछ महत्वपूर्ण नदियाँ

- **ओब नदी-** पश्चिमी साइबेरिया के मैदान से निकलकर उत्तर में स्थित कारा सागर में गिरती है।
- **येनेसी नदी-** पश्चिमी साइबेरिया से निकलकर मध्य साइबेरिया के मैदान से होती हुई कारा सागर में गिरती है।
- **लीना नदी** का उद्गम बैकाल झील है, जो लाप्टेव सागर में गिरती है।
- **कोलयामा नदी-** कोलयामा पर्वत से निकलकर पूर्वी साइबेरियन सागर में गिरती है। यह पूर्वी साइबेरिया की नदी है।

- **अमूर नदी-** रूस तथा मंगोलिया की सीमा से निकलकर, रूस और चीन के मध्य सीमा बनाते हुये प्रशांत महासागर में स्थित **सखालिन द्वीप** के पास गिरती है।

विविध

- साइबेरिया का आधा पश्चिमी भाग समतल तथा अवसादी शैलों से बना हुआ है, जबकि पूर्वी भाग अपरदित पठार है।
- आर्कटिक महासागर में स्थित कुछ सागर जो रूस की सीमा से लगे हुये हैं-
 1. कारा सागर - पश्चिमी साइबेरिया
 2. लाप्टेव सागर - मध्य साइबेरिया
 3. पूर्वी साइबेरियन सागर - पूर्वी साइबेरिया
 4. चुक्ची सागर - पूर्वी साइबेरिया

नोट: रूस के एशियाई क्षेत्र को साइबेरिया कहते हैं।

एशिया महाद्वीप के प्रमुख सागर- (प्रशांत महासागर में स्थित)

- **बेरिंग सागर-** रूस के उत्तर-पूर्व में प्रशांत महासागर में स्थित है।
- **ओखोट्स्क सागर-** पूर्वी रूस से लगा हुआ प्रशांत महासागर में स्थित है।
- **जापान सागर-** जापान के पश्चिम तथा कोरिया प्रायद्वीप के पूर्व में, जिसे पूर्वी सागर भी कहते हैं।
- **पीला सागर-** चीन के पूर्व में तथा कोरिया के पश्चिम में स्थित
- **पूर्वी चीन सागर-** चीन के पूर्व में
- **दक्षिण चीन सागर-** चीन के दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित
- **सेलेबस सागर-** सेलेबस द्वीप के उत्तर में
- **बांडा सागर-** न्यू गीनिया के पश्चिम तथा सेलेबस द्वीप के पूर्व में
- **फ्लोरस सागर-** सेलेबस द्वीप के दक्षिण में
- **मलक्का सागर-** सेलेबस द्वीप के पूर्व में
- **जावा सागर-** जावा द्वीप के उत्तर में
- **तिमोर सागर-** ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पश्चिम में
- **अराफुरा सागर-** ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में (दक्षिणी प्रशांत में)
- **बंगाल की खाड़ी-** भारतीय प्रायद्वीप के पूर्व में (हिंद महासागर में)
- **अरब सागर-** भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिम में (हिंद महासागर में)
- **लाल सागर-** अफ्रीका तथा एशिया को अलग करता है।
- **सुलु सागर-** फिलीपींस द्वीप समूह के पश्चिम में।

एशिया की प्रमुख जलसंधियाँ

- **बेरिंग जलसंधि-** प्रशांत महासागर में स्थित जलसंधि, जो एशिया (रूस के साइबेरिया) को उत्तरी अमेरिका (अलास्का) से अलग तथा पूर्वी साइबेरियन सागर को बेरिंग सागर से जोड़ती है।
- **सोया जलसंधि-** प्रशांत महासागर में स्थित है, जो सखालिन द्वीप को हैकेडो द्वीप (जापान) से अलग तथा ओखोट्स्क सागर एवं जापान सागर को जोड़ती है।
- **तातर जलसंधि-** पूर्वी रूस तथा सखालिन द्वीप को अलग और ओखोट्स्क सागर को जापान सागर से जोड़ती है।
- **सुगारु जलसंधि-** जापान के होन्शू द्वीप को हैकेडो द्वीप से अलग करती है तथा जापान सागर को प्रशांत महासागर से जोड़ती है।
- **कोरिया जलसंधि तथा सुशिमा जलसंधि-** जापान सागर को पीला सागर से जोड़ती है तथा जापानी द्वीपों को कोरिया प्रायद्वीप से अलग करती है। यहीं पर पीला सागर का एक छोटा भाग स्थित है, जिसे **पो हाई** या **बो हाई** की खाड़ी के नाम से जाना जाता है। यह चीन के पूर्व में स्थित है।

- **फॉर्मोसा जलसंधि या ताइवान जलसंधि-** ताइवान एवं चीन के मध्य स्थित वह जलसंधि पूर्वी चीन सागर को दक्षिण चीन सागर से जोड़ती है।
- **लूजोन जलसंधि-** ताइवान तथा फिलीपींस के लूजोन के मध्य स्थित वह जलसंधि दक्षिण चीन सागर को प्रशांत महासागर से जोड़ती है।
- **मकस्सार जलसंधि-** बोर्नियो एवं सेलिबीज द्वीप के मध्य स्थित है, जो सेलिबीज सागर को जावा सागर से अलग करती है।
- **सुण्डा जलसंधि-** इंडोनेशिया के जावा तथा सुमात्रा द्वीपों को अलग करती है तथा जावा सागर को हिंद महासागर से जोड़ती है।
- **जोहोर जलसंधि-** सिंगापुर तथा मलेशिया के मध्य स्थित है, जो दक्षिण चीन सागर को मलक्का जलसंधि से जोड़ती है।
- **मलक्का जलसंधि-** मलय प्रायद्वीप को इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप से अलग करती है तथा जावा सागर को हिंद महासागर के साथ जोड़ती है।
- **ग्रेट चैनल-** सुमात्रा को अण्डमान-निकोबार द्वीपसमूह से अलग करती है तथा अण्डमान सागर को हिन्द महासागर से जोड़ती है।
- **पाक जलसंधि-** हिंद महासागर की यह जलसंधि भारतीय प्रायद्वीप को श्री लंका से अलग करती है तथा बंगाल की खाड़ी को मन्नार की खाड़ी से जोड़ती है।
- **होरमुज जलसंधि-** संयुक्त अरब अमीरात एवं ईरान को अलग करती है तथा फारस की खाड़ी को ओमान की खाड़ी से जोड़ती है।
- **बाब-अल-मंदेब जलसंधि-** पश्चिम एशिया में स्थित यमन को हॉर्न ऑफ अफ्रीका के देशों से अलग करती है तथा लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ती है।
- **बॉस्फोरस जलसंधि-** एशिया एवं यूरोप के मध्य में स्थित है, जो काला सागर को मरमरा सागर से जोड़ती है।
- **डारडनेल्स जलसंधि-** एशिया को यूरोप से अलग तथा मरमरा सागर को भूमध्य सागर से जोड़ती है।

एशिया महाद्वीप के प्रमुख पर्वत, शिखर तथा पठार

- **हिमालय-** यह एक नवीन मोड़दार पर्वत का उदाहरण है, जो विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत भी है। इसका विस्तार पश्चिम में अफगानिस्तान (हिंदूकुश) से लेकर पूर्व में म्यांमार (अराकान योमा) तक है। इसका सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट, नेपाल में स्थित है, जो विश्व का भी सबसे ऊँचा शिखर है।
- **माउंट बामा-** इंडोनेशिया का प्रसिद्ध ज्वालामुखी पर्वत है।
- **सारामती शिखर-** यह म्यांमार का सबसे ऊँचा पर्वत है।
- **तेनसांग बाई पर्वत-** थाईलैंड का सबसे ऊँचा पर्वत है।
- **थ्यानसान-** चीन का सबसे प्रमुख पर्वत है।
- **स्टालिन-** रूस का सर्वोच्च शिखर
- **फ्यूजीयामा-** जापान का सबसे बड़ा ज्वालामुखी पर्वत
- **फैनसीयान पर्वत-** हिंद-चीन का सर्वोच्च शिखर
- **कुर्दिस्तान पर्वत श्रेणी-** ईराक का सबसे ऊँचा पर्वत
- **जाग्रोस पर्वत श्रेणी-** ईरान में स्थित पर्वत श्रेणी जिसका सर्वोच्च शिखर माउंट एल्ब्रुज है।
- **सुलेमान पहाड़ियाँ-** पाकिस्तान में स्थित पर्वत श्रेणी है।

एशिया के पठार

- **तिब्बत का पठार-** इसे विश्व की छत की संज्ञा दी जाती है क्योंकि इस पठार की ऊँचाई सम्पूर्ण विश्व के पठारों में सर्वाधिक है। यह तिब्बत-चीन में फैला हुआ है, जो हिमालय का गिरीपदीय पठार है।
- **पामीर का पठार-** यह मुख्य रूप से ताजिकिस्तान में स्थित पठार है, इसे पामीर की गाँठ भी कहते हैं क्योंकि यहाँ से बहुत से पर्वत निकलते हैं।
- **ईरान का पठार-** इसका विस्तार ईरान, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान में है। यहाँ पर ईरान में दस्त-ए-काबिर तथा दस्त-ए-लुट नामक रेगिस्तान भी पाये जाते हैं।

- यूनान का पठार- दक्षिण चीन में स्थित है।
- अनातोलिया का पठार- तुर्की में स्थित है।
- अरब का पठार- अरब प्रायद्वीप पर स्थित इस पठार पर रेगिस्तानी जलवायु क्षेत्र पाया जाता है।
- दक्कन का पठार- यह भारत के दक्षिण में प्रायद्वीपीय क्षेत्र में फैला हुआ बसाल्ट चट्टानों से निर्मित पठार है।
- शान का पठार- म्यांमार में स्थित है, जो खनिजों के लिये प्रसिद्ध है।

एशिया की महत्वपूर्ण झीलें

- कैस्पियन सागर- विश्व की सबसे बड़ी झील है, जो अपने वृहद आकार के कारण सागर भी कही जाती है। इसके तट पर स्थित देशों में रूस, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ईरान तथा अजरबैजान, 5 देश शामिल हैं।
- अरल सागर- यह झील कजाकिस्तान तथा उज्बेकिस्तान में विस्तारित है, जिसमें मानवीय गतिविधियों के चलते सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गयी है और यह झील विलुप्ति की कगार पर है।
- बाल्खश झील- यह झील कजाकिस्तान में स्थित है।
- टोन्ले लेक- कम्बोडिया में स्थित झील है।
- इसुककुल झील- किर्गिस्तान में स्थित झील है।
- उर्मिया झील- ईरान में स्थित एक प्रसिद्ध झील है।
- वॉन झील- यह विश्व की सबसे अधिक लवणीय झील है, जिसकी अवस्थिति टर्की में है।
- मृत सागर- यह खारे पानी की एक विश्व प्रसिद्ध झील है, जिसके तट पर इजराइल व जॉर्डन स्थित है।

एशिया महाद्वीप की प्रमुख नदियाँ

- ह्वांगहो नदी- यह चीन की नदी है, जो तिब्बत के पठार से निकलकर वो हाई की खाड़ी (पीला सागर) में जाकर गिरती है। इसे पीली नदी भी कहते हैं।
- यांगत्सी नदी- यह चीन की नदी है, जो तिब्बत के पठार से निकलकर पूर्वी चीन सागर में गिरती है। इसके तट पर चीन की आर्थिक राजधानी शंघाई शहर स्थित है। यह एशिया की सबसे लम्बी नदी भी है।
- मेकांग नदी- तिब्बत के पठार से निकलकर चीन तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के 5 देशों से होकर गुजरती है, जिनमें म्यांमार, थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया और वियतनाम शामिल हैं। यह नदी अपना जल दक्षिण चीन सागर में स्थित थाईलैंड की खाड़ी में गिराती है। यह दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे लम्बी नदी भी है।
- सालवीन नदी- तिब्बत के पठार से निकलकर चीन होते हुए म्यांमार की मर्तवान की खाड़ी में गिरती है।
- इरावदी नदी- हिमालय में मोड़ के पास से निकलकर यह नदी पूर्ण रूप से म्यांमार में बहती है। इसे म्यांमार की जीवन रेखा भी कहते हैं। इस नदी के मुहाने पर यंगून बंदरगाह स्थित है।

Note- तिब्बत के पठार में स्थित चेमायुंगडुंग हिमनद से बनने वाली मानसरोवर झील से तीन नदियाँ निकलती हैं- पूर्व में हिमालय के साथ-साथ बहने वाली ब्रह्मपुत्र तथा पश्चिम में बहने वाली सिंधु और सतलज।

- सिंधु नदी- भारत के केवल एक राज्य (जम्मू-कश्मीर) से होकर पाकिस्तान में चली जाती है। इस नदी के मुहाने पर पाकिस्तान में कराची एक बंदरगाह शहर है। यह नदी अरब सागर में गिरती है।
- सतलज नदी- भारत के दो राज्यों (हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब) से होते हुए पाकिस्तान में जाकर सिंधु से मिल जाती है।
- ब्रह्मपुत्र नदी- चीन में इसे सांगपो के नाम से तथा भारत में ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है, जो तीन देशों से होकर गुजरती है। इनमें चीन, भारत तथा बांग्लादेश शामिल हैं। यह नदी अपना जल बंगाल की खाड़ी में गिराती है।
- गंगा नदी- उत्तराखंड में स्थित गंगोत्री हिमनद से निकलने वाली नदी, जो भारत और बांग्लादेश में प्रवाहित होती है तथा बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र से मिलने के बाद पद्मा कहलाती है और अपना जल बंगाल की खाड़ी में गिराती है।
- महावेली गंगा- श्री लंका की प्रमुख नदी है।
- सिर दरिया तथा अमू दरिया- ये दोनों मध्य एशिया में बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं, जो पामीर के पठार से निकलकर अपना जल अरल सागर में गिराती हैं। सिर दरिया कजाखिस्तान में मुख्य रूप से बहती है।

- **टिगरिश नदी-** यह नदी मुख्य रूप से 'ईराक की नदी' के नाम से जानी जाती है, जिसके तट पर ईराक की राजधानी बगदाद स्थित है। इस नदी का जल फारस की खाड़ी में गिरता है।
- **यूफ्रेटिश नदी-** इस नदी का मुख्य प्रवाह ईराक तथा सीरिया में है। इसके तट पर ईराक का प्रमुख शहर अल-बशरा स्थित है। इसे सीरिया में फरात के नाम से जाना जाता है, जो अपना जल फारस की खाड़ी में गिराती है।
- **जॉर्डन नदी-** यह नदी मृत सागर से होकर बहती है। जॉर्डन के पश्चिम में बहने वाली यह नदी, जॉर्डन और इजराइल के मध्य सीमा निर्धारित करती है।

एशिया के महत्वपूर्ण रेगिस्तान (मरुस्थल)

- **गोबी का मरुस्थल-** पूर्वी एशिया में स्थित यह रेगिस्तान मंगोलिया तथा चीन में विस्तारित है, जो ठंडे मरुस्थल का उदाहरण है।
- **तकला-माकन मरुस्थल-** चीन के पश्चिमी भाग में स्थित है।
- **थार मरुस्थल-** यह भारतीय महाद्वीप में विस्तारित मरुभूमि है, जिसका जनसंख्या घनत्व विश्व के सभी मरुभूमियों से अधिक है। इसकी ऊँचाई भी सभी मरुस्थलों से कम है।
- **काराकुम मरुस्थल-** यह मरुस्थल तुर्कमेनिस्तान में स्थित है, जो कैस्पियन सागर के तट से लगा हुआ है।
- **रुब-अल-खाली मरुस्थल-** अरब प्रायद्वीप पर स्थित इस रेगिस्तान का विस्तार सउदी अरब, यमन, ओमान तथा संयुक्त अरब अमीरात में है। यह विश्व का सर्वाधिक निवास विहीन मरुस्थल है, जो सबसे बड़ा बालू निर्मित क्षेत्र भी है।
- **अन-नफूद मरुस्थल-** यह मरुस्थल भी सउदी अरब में विस्तारित है।
- **दस्त-ए-कबीर तथा दस्त-ए-लुट-** ये दोनों मरुस्थल ईरान में स्थित हैं। जिनमें से दस्त-ए-कबीर को 'ग्रेट साल्ट डेजर्ट' भी कहा जाता है।
- **सीरियन मरुस्थल-** इसका विस्तार मुख्य रूप से सीरिया, ईराक, टर्की तथा जॉर्डन तक है। इसे वदियत-अश-शाम के नाम से भी जाना जाता है।

एशिया के प्रमुख मैदान

- **कांटो मैदान-** यह द्वीपीय देश जापान में स्थित है, जहाँ पर जापान की राजधानी टोक्यो विकसित हुई है। यहाँ पर जापान की सर्वाधिक खेती होती है।
- **मंचूरिया का मैदान-** चीन में स्थित इस मैदान का विकास अमूर तथा उसकी सहायक नदी से हुआ है।
- **तुरान का मैदान-** इसका विस्तार तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान तथा कजाकिस्तान में स्थित है। इस मैदान का निर्माण सिर दरिया तथा अमू दरिया नदियों से हुआ है।
- **गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान-** इसका विस्तार भारत तथा बांग्लादेश में है, जिसका निर्माण गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों के द्वारा हुआ है।
- **सिंधु का मैदान-** इसका विस्तार भारत तथा पाकिस्तान में है। सिंधु तथा इसकी सहायक नदियों के द्वारा इसका निर्माण हुआ है। इसी नदी घाटी में प्राचीन हड़प्पा सभ्यता का विकास हुआ था।
- **मेसोपोटामिया का मैदान-** इस मैदान का निर्माण दजला-फरात नामक दो नदियों के अपवाह के फलस्वरूप अवसादों से हुआ है। इसका विस्तार सउदी अरब, ईराक आदि देशों में है, इसी मैदान में प्राचीनतम सभ्यता में शामिल मेसोपोटामिया की सभ्यता का भी विकास हुआ है।

एशिया महाद्वीप के कुछ महत्वपूर्ण द्वीपीय तथा प्रायद्वीपीय देश

जापान- यह देश अनेक द्वीपों से मिलकर बना है, जो ज्वालामुखी द्वीप का उदाहरण है। प्रशांत महासागर में स्थित यह देश मुख्य रूप से चार द्वीपों पर विस्तारित है, जिनका उत्तर से दक्षिण क्रम निम्न प्रकार है- होकैडो, होन्शू, शिकाकू तथा क्यूशू। जिनमें से होन्शू सबसे बड़ा तथा सर्वाधिक उद्योगीकृत द्वीप है। यही पर हिरोशिमा शहर स्थित है। जापान के सबसे दक्षिणी द्वीप क्यूशू पर विश्व प्रसिद्ध शहर नागासाकी स्थित है। विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर टोक्यो, जो कि जापान की राजधानी भी है, होन्शू द्वीप पर बंदरगाह शहर है।

कोरियन प्रायद्वीप- इस प्रायद्वीप में दो देश स्थित हैं, जो 38^0 उत्तरी अक्षांश द्वारा एक-दूसरे से अलग होते हैं तथा उत्तर में स्थित देश **उत्तर कोरिया** और दक्षिण में स्थित देश **दक्षिण कोरिया** के नाम से जाना जाता है। इन दोनों देशों का विभाजन विचारधारा के आधार पर किया गया, जिसमें उत्तर कोरिया, चीन संरक्षित राज्य बना तथा दक्षिण कोरिया, अमेरिका का संरक्षित राज्य। प्रायद्वीप के पूर्व में जापान सागर तथा पश्चिम में पीला सागर अवस्थित है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वीपीय देश

- **इण्डोनेशिया-** यह विश्व के सर्वाधिक द्वीपों से निर्मित एक देश है, जिसके बड़े तथा प्रमुख द्वीपों में सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, बाली, इरियन जाया तथा तिमोर हैं। इसके अलावा अन्य छोटे-छोटे द्वीप भी हैं। इसकी राजधानी जकार्ता, जावा द्वीप पर स्थित है। ये द्वीपसमूह हिंद-प्रशांत की सीमा पर हैं।
- **फिलीपींस-** प्रशांत महासागर में स्थित यह द्वीपसमूह ज्वालामुखी द्वीप के उदाहरण हैं। इनके पश्चिम में दक्षिण चीन सागर तथा पूर्व में प्रशांत महासागर है।
- **बोर्नियो द्वीप-** यह एशिया महाद्वीप में स्थित सबसे बड़ा द्वीप है, जिस पर तीन देशों का अधिकार है। इनमें क्रमशः उत्तर से दक्षिण क्रम निम्न हैं- एक स्वतंत्र देश ब्रुनेई, मलेशिया का प्रान्त साबाह तथा इण्डोनेशिया का प्रान्त बोर्नियो हैं।

विविध

- एशिया के रूस में स्थित बर्खोयांस्क नामक स्थल संपूर्ण विश्व का सबसे ठंडा क्षेत्र है।
- काला सागर के तट पर स्थित एशिया के देशों में टर्की, जार्जिया तथा रूस के तटीय क्षेत्र आते हैं।
- भूमध्य सागर से तटीय सीमा बनाने वाले पश्चिम एशियाई देशों में इजराइल, लेबनान, सीरिया तथा टर्की हैं। वहीं साइप्रस भूमध्य सागर में स्थित एक द्वीपीय देश है।
- अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह हिंद महासागर की बंगाल की खाड़ी में स्थित एक महत्वपूर्ण द्वीप समूह है, जहाँ भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी पर्वत, बैरन द्वीप पर स्थित है।
अण्डमान और निकोबार को 10^0 चैनल नामक अक्षांश एक-दूसरे से अलग करता है।
- ताइवान प्रशांत महासागर में स्थित एक द्वीपीय देश है, जिस पर चीन हमेशा से दावा करता रहा है तथा इसे चीनी-ताइपे के नाम से अपने नक्शे में दिखाता है।
- दक्षिण-पूर्व एशिया में एकमात्र स्थलाबद्ध देश लाओस है, जो अपनी सीमा चीन, वियतनाम, कम्बोडिया, थाइलैंड तथा म्यांमार से साझा करता है।
- टांकिन की खाड़ी, चीन के दक्षिण तथा वियतनाम के पूर्व में, दक्षिण चीन सागर में स्थित है। जिसके तट पर वियतनाम का हाइफोंग शहर स्थित है।
- एशिया महाद्वीप का एकमात्र देश इण्डोनेशिया है, जिससे होकर विषुवत रेखा गुजरती है। यहाँ सदाहरित वन पाये जाते हैं।

एशिया महाद्वीप की जलवायु- जलवायु को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक हैं- इसका विशाल आकार, व्यापक अक्षांशीय विस्तार तथा उच्चावच। वृहत पर्वतीय जलवायु अवरोध का एशिया में पूर्व से पश्चिम तक विस्तार तथा यूरोप के साथ इसकी खुली सीमा भी एशिया की जलवायु को प्रभावित करती है। एशिया महाद्वीप विषुवत रेखा से लेकर ध्रुवीय प्रदेश तक फैला हुआ है। यहाँ की जलवायु में काफी विविधता पाई जाती है। जलवायु आधार पर एशिया को निम्न प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है-

1. **मानसूनी एशिया-** दक्षिण, दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रदेशों की जलवायु मानसूनी प्रकार की है। मानसूनी जलवायु में 6 महीने वायु सागर से स्थल की ओर (गर्मी के दौरान) और 6 महीने (सर्दी में) स्थल से जल की ओर चलती है। उस जलवायु में एक वर्ष के दौरान गर्मी, सर्दी तथा बरसात के तीन मौसम होते हैं। गर्मी एवं सर्दी में तापमान के बीच का अंतर काफी अधिक होता है, वहीं औसत वार्षिक वर्षा 200cm से भी अधिक होती है। दक्षिण से उत्तर की ओर आते हुये फसलों को उगाने के समय में कमी होती जाती है। भारत के मेघालय का मौसिनराम विश्व का सबसे अधिक वर्षा प्राप्त करने वाला स्थान है। लेकिन एशिया में लाल सागर से लेकर

मंगोलिया तक फैला विश्व का सबसे बड़ा क्षेत्र ऐसा भी है, जहाँ वर्षा बहुत कम होती है। महाद्वीप में वर्षा तथा तापमान में बहुत अधिक भिन्नता पायी जाती है, जो यहाँ की वनस्पतियों में भी दिखाई देती है।

एशिया में भारी वर्षा वाले तीन क्षेत्र हैं-

- (i) भारत से हिंद-चीन और दक्षिणी चीन तक
- (ii) पूर्वी द्वीप समूह
- (iii) जापान

इनमें पहला ग्रीष्मकालीन, दूसरा विषुवतीय एवं तीसरा शीतकालीन वर्षा का क्षेत्र है। एशिया में 90% वर्षा ग्रीष्मकाल में होती है। जापान तथा द० पू० एशिया के कुछ भागों में शीतकालीन वर्षा होती है।

2. **शुष्क एशिया** - मध्य एशिया, मंगोलिया तथा द० पू० एशिया के कुछ भागों में जलवायु शुष्क पायी जाती है। इन प्रदेशों में औसत वार्षिक वर्षा 2.5cm से लेकर 20cm तक ही होती है। यहाँ पर वर्षा की अपेक्षा वाष्पीकरण तीव्र गति से होता है। इस क्षेत्र में वर्षा की भारी अनिश्चितता पाई जाती है। पाकिस्तान का जैकोबाबाद एशिया का सबसे गर्म स्थान है, जहाँ का तापमान 57°C दर्ज है।
3. **शीत एशिया** - एशिया के उत्तर में साइबेरिया प्रान्त का तापमान शीत ऋतु में -60°C से भी नीचे चला जाता है। तटीय भागों से अंदर की ओर जाने पर वार्षिक वर्षा में भारी कमी होती है। वार्षिक तापान्तर संसार में सबसे अधिक इसी जलवायु में पाया जाता है। निम्न तापमान के कारण मिट्टी हिमांक बिंदु से नीचे का तापमान रखती है। इसको पर्माफ्रॉस्ट कहते हैं। ऐसी परिस्थिति में खेती-बाड़ी करना असम्भव होता है।

एशिया महाद्वीप की मृदायें

एशिया की मिट्टी, जलवायु तथा वनस्पति प्राकृतिक अनुकूलता रखती है। उत्तर में टुण्ड्रा की मिट्टी निम्न तापमान के कारण जमी रहती है। टुण्ड्रा पेटी के नीचे टैगा की पेटी है, जिसकी मिट्टी पोडजॉल है। इन मिट्टियों में अधिक अम्लता होती है। टैगा के दक्षिण में पतझड़ एवं कोणधारी वृक्षों वाली पेटी है, जिसकी मिट्टी काले रंग की है। इन मिट्टियों में खाद की मात्रा अधिक होती है। मरुस्थलों की मिट्टी को जहाँ सिंचाई का पानी मिल गया है, बहुत उपजाऊ होती है। इनमें कल्लर और ऊसर प्रकार की मृदा उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहती है। पर्वतीय ढलानों पर मिट्टी की परत पतली होती है, जिसमें कटाव की प्रकृति प्रबल होती है। गर्म-आर्द्र तथा मानसूनी प्रदेशों में पेडाल्फर प्रकार की मिट्टियाँ होती हैं, जिनमें आरयन-ऑक्साइड की मात्रा अधिक होती है। वास्तव में, अधिक वर्षा के कारण मिट्टी से खाद की मात्रा कटकर बह जाती है। इनका रंग लाल होता है, जो अधिक उपजाऊ नहीं होती हैं। नदियों द्वारा निर्मित मिट्टी कछारी होती है, जो विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाने के लिये उपयुक्त होती है। ज्वालामुखी वाले प्रदेशों में लावा मिट्टी होती है। भारत में दक्कन पठार तथा जावा द्वीप की मिट्टी इसका उदाहरण हैं।

प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीव

एशिया की प्राकृतिक वनस्पति में व्यापक भिन्नता पाई जाती है। यहाँ पर एक ओर आर्कटिक टुण्ड्रा की काई और लिचेन तथा दूसरी ओर दक्षिण-पूर्व एशिया के सदाबहार वन भी पाये जाते हैं।

एशिया के किसी न किसी भाग में हर प्रकार की वनस्पति पेटियां पायी जाती हैं। यहाँ वनस्पति का जलवायु से घनिष्ठ संबंध है। एशिया के उत्तरी तट के साथ-साथ टुण्ड्रा वनस्पति की पेटी है। यहाँ की अधिकांश भूमि वर्ष भर बर्फ से ढकी रहती है। जबकि वर्षा का लगभग 30cm भाग हिम के रूप में होता है। ग्रीष्म ऋतु छोटी और ठण्डी होती है जबकि शीत ऋतु लम्बी और बहुत अधिक ठंडी होती है। इसके फलस्वरूप पौधे लम्बे नहीं हो पाते हैं। यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण पशु रेंडियर है। काई और लिचेन यहाँ की मुख्य वनस्पति है।

टुण्ड्रा प्रदेश के दक्षिण में शंकुधारी वनों की विस्तृत पेटी है, जिसे टैगा कहते हैं। यहाँ पर वार्षिक वर्षा 25cm से 50 cm के बीच मुख्यतः हिम के रूप में होती है। यह प्रदेश मुलायम लकड़ी वाले वृक्षों जैसे- चीड़, फर और स्प्रूस के लिये जाना जाता है। इन वृक्षों की लकड़ी इमारत बनाने, कागज और रेयान तैयार करने में काम आती है। टैगा वनों में समूर वाले जानवर जैसे -लोमड़ी, सेंबल तथा मिक पाये जाते हैं। टैगा के दक्षिण में

शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान हैं, जिन्हें स्टेपीज कहा जाता है। यहाँ शीत ऋतु में अत्यधिक ठंड पड़ती है तथा ग्रीष्म ऋतु में साधारण गर्मी। वार्षिक वर्षा 20 से 40cm तक होती है।

वाष्पीकरण अधिक होने के कारण, यहाँ होने वाली वर्षा वृक्षों के उगने और बढ़ने के लिये पर्याप्त नहीं है। अतः यहाँ पर घास भूमियाँ ही अधिक मिलती हैं। यहाँ घास खाने वाले जानवर पाये जाते हैं। दक्षिण-पश्चिम और मध्य के भू-भाग पर मरुस्थल पाये जाते हैं। जहाँ दक्षिण-पश्चिम में अरब और थार का मरुस्थल गर्म मरुस्थल हैं, वहीं मध्य एशिया में विस्तृत गोबी और तिब्बत का मरुस्थल ठंडे मरुस्थल के उदाहरण हैं। इस प्रदेश में मरुस्थलीय वनस्पतियाँ पायी जाती हैं। यहाँ पेड़-पौधों के विकास के लिये अनुकूल दशाएँ नहीं होती तथा छोटी-छोटी कटीली झाड़ियाँ और निम्न कोटि की घास ही उगती है। ऊँट, गधा और विशिष्ट प्रकार का एक छोटा हिरण इस प्रदेश के पशु हैं। ऊँचे पठारी भागों में याक पाया जाता है।

दक्षिणी, दक्षिणी-पूर्वी तथा पूर्वी एशिया में मानसूनी वन पाये जाते हैं। इस प्रदेश में ग्रीष्म ऋतु गर्म और आर्द्र होती है। यहाँ अधिकतर वर्षा ग्रीष्म ऋतु में 65 से 125cm के मध्य होती है। शीत ऋतु मृदुल तथा शुष्क होती है। मानसूनी वनों में बहुत से उपयोगी वृक्ष जैसे- सागौन, साल, चंदन आदि मिलते हैं। इन वनों का विशिष्ट पशु हाथी है। उत्तरी-पूर्वी एशिया में अपेक्षाकृत अधिक ठंडी जलवायु मिलने के कारण शीतोष्ण वन पाये जाते हैं। एशिया के सुदूर दक्षिणी भागों में जो विषुवत वृत्त के अधिक निकट है, विषुवतीय वर्षा वन मिलते हैं। ये वन सघन तथा इनमें विविध प्रकार के वृक्ष, पौधे तथा झाड़ियाँ मिलती हैं। इन वनों में लंगूर, बंदर और अन्य विविध प्रकार के वन्य प्राणी मिलते हैं।

